आज का पुरुषार्थ 20 July 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *"हमें कर्मयोगी जीवन जीना है .. कर्मातीत अवस्था प्राप्त करना है .. तो अब से दिन भर यही धुन लगी रहे "*

कर्म करते **योगयुक्त** रहना बहुत सुन्दर स्वप्न है। इसका अर्थ होता है कि हम कर्म कॉन्शास न हो। कर्म का प्रभाव हम पे न रहे। **कर्म** करते हम थोड़ा कर्म से detach हो और बुद्धि सर्वशक्तिमान से लगी हुई हो।

प्रसिद्ध है कुछ चीजें प्राचीन काल के ऋषियों की कि वे चलते फिरते भी समाधिस्थ रहते थे। आदि **शंकराचार्य** और भी ऋषि मुणी भी। यह वही स्थिति है कि चल फिर रहे है, देख रहे है नीचे, और दिव्य नेत्र से ऊपर देख रहे है हम अपने परमपिता को।

यहाँ भी लोग उनसे जुड़े हुए है, लेकिन असलियत में जुड़े हुए है अपनी परमपिता, परम शिक्षक और परम सदगुरू से। यह राजयोग कर्मयोग है।

और जब यह राजयोग कर्मयोग बन जाता है, तो जीवन का आनन्द ही कुछ और होता है।

आप सभी के पास कर्मयोग की प्रैक्टिस का प्रोग्राम आ रहा है। और सभी इस पर बहुत ध्यान देंगे। तो योग की सभी समस्यायें समाप्त होंगी। हम सरल सरल सी विधि पहले आपके समक्ष रखेंगे। जो सहज ही की जा सकती है।

पर ध्यान देना होगा कि **कर्मेन्द्रियों** के रसों से स्वयं को मुक्त रखें। सुनने का रस, देखने का रस, बोलने का रस, खाने का रस। यह जो रस है कर्मेन्द्रियों के यह **आत्मा** को नीचे की ओर खींच ले आते है। मन में व्यर्थ संकल्पों का प्रभाव तेज कर देते है। और तब योगयुक्त स्थिति रह नहीं पाती है।

हमें ध्यान देना है के अगर योगी जीवन बनाना है तो स्थिति को **योगयुक्त** अवश्य करना होगा। विना कर्मयोग के कोई कर्मातीत हो नहीं सकता। विना कर्मयोग के कोई दिव्य कर्म भी नहीं कर सकता।

अद्भुत कला है ना। नीचे रह रहे है, स्थिति ऊपर है। देख संसार को रहे है, परन्तु कुछ भी नहीं देख रहे है। नई दुनिया को देख रहे है। तीनों लोकों को देख रहे है। तीनों कालों को देख रहे है। इधर लोगों की भी सुनते है, पर भगवान को सुन रहे है। उनकी प्यार की अनुभूति कर रहे है। यहाँ प्यार बाँट रहे है, ऊपर से प्यार ग्रहण करते जा रहे है।

ऐसी **पवित्र** आत्मायें संसार के लिए बहुत बड़ी शोभा है। ऐसे योगी चलते फिरते लाइट हाउस होते है। ऐसी योगयुक्त आत्माओं की उपस्थिति ही संसार के लिए बहुत कल्याणकारी होती है। जिधर वह देखते है उधर उनके वायब्रेशन्स फैलते जाते है।

वे धरती पर चलते है, धरती में पवित्र वायब्रेशन्स समाते रहते है। वे जिन वस्तुओं को अपने पवित्र हस्तों से स्पर्श करते है उनके पवित्र वायब्रेशन्स उन सबमें समा जाते है।

तो चलते फिरते सहज भाव से प्रकृति की सेवा और विश्व की सेवा ऐसे महान योगियों के द्वारा होती रहती है। तो हम बहुत ध्यान दे बाबा के महावाक्य पर ...

" तुम्हारी सर्वश्रेष्ठ साधना है बुद्धि को स्थिर करना "

बुद्धि को मनुष्य ने बहुत भटकाया है। न जाने उसमें क्या क्या गंदगी भर ली है। ऐसी चीजें भर ली जो बुद्धि को स्थिर रहने ही नहीं देती है।

लेकिन हमें बुद्धि को चारों ओर से हटाकर अन्तर्मुखी होकर एक में लगा देना है। तो कर्म करते बहुत सुन्दर अभ्यास करेंगे। यद्यपि पन्द्रह दिन का थोड़ा सा समय है इस अभ्यास के लिए। लेकिन पन्द्रह दिन भी अगर हम धुन लगायेंगे तो कुछ चीजें हमारी आदत में बेशुमार हो जायेगी।

और तब हम योगयुक्त होकर कर्म के प्रभाव से भी मुक्त रहेंगे। और संसार ऐसे विचरण करेंगे .. मानो यहाँ हम रहते ही न हो।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org